भारत ने जफना पर रसद गिर

मिराज विमानों के संरक्षण में सफल कार्रवाई

—जनसत्ता ब्यूरो—

जाफना की वायु सीमा से, ४ जून। भारत ने श्रीलंका सरकार के अनुरोधों से मुंह मोड़कर तमिल उग्रवादियों को सहायता देने के लिए आज वायु सेना के पांच विमानों से जाफना और दूसरे इलाकों में राहत सामग्री गिराकर हलचल मचा दी। श्रीलंका सरकार पिछले तीन दिनों से भारत द्वारा सहायता दिए जाने का विरोध करती रही और आज शाम पौने पांच बजे भी हमारे विमानों ने सीमा में घुसते समय श्रीलंका को राहत सामग्री लेकर जाने की सूचना दी, लेकिन श्रीलंका ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया और न ही सैनिक प्रतिरोध करने की घोषणा की।

सामरिक वायु सेना के ए.एन.-३२ मालवाहक विमानों में से एक विमान में बैठे हुए संवाददाता को जाफना शिवी की वायु सीमा से प्रवेश से समय संयुक्त रोमांच और डर से चिल्लाकर पीछे चल रहे जाने की चिन्ता का अनुभव हो रहा है। इस विमान को बंगलौर सेनाओं हुए स्क्वाड्रन लीडर वी.पी. पटवर्धन पूरे जम्मीदिवसम के बाद विमान जैसा वायु पार की ओर की उंचाई तक उड़ाते हुए निर्धारित स्थान खोज रहे हैं। विमान की एडमाडार और हवा के वेग झोंके से बीच उसके साथियों पैराशूट में बंधे राहत सामग्री के डिब्बों और थैलों को खिड़की तरफ धकेलते हैं।

उड़ रहे इन विमानों से गिराया जा रहा सामान उड़ता हुआ दिख रहा है, लेकिन हमारे विमान से डिब्बे गिराने में देरी होने देख हमारी चिन्ता बढ़ रही है। नीचे जफना के छोटे-छूटे-छूटे मकान और दूर समुद्र दिखाई दे रहा है। विमान के सहयोगी विंग कमांडर पी.एस.बी. सचदेव ने इशारा किया—'सामान गिराने वाले ऑटोमेटिक सिस्टम में कुछ गड़बड़ है।' सचदेव गिराते ही चालक सुधीर लाहमाला और विंग मुर्ति तुरन्त सुराग पाईलट खोलकर खिड़की तरफ झुके हुए कई दरवाजे के पास पहुंचकर सामान धकेलते हैं। घबराहट पैराट नीचे गिरे और विमान सीधा ऊपर उठाकर अंदर आता दरवाजा बंद।

खिला में हुये पैकर खुशी के उल्लास से चमक गए। इस विमान में बाहर छह सात संवाददाता विमान के अन्दर और सहयोगियों को बधाई देते हैं। हमारे विमान ने जफना के दक्षिण में पंख किलोमीटर क्षेत्र में पांच टन राहत सामग्री गिराई। इस तरह पांचों विमानों ने करीब पन्द्रह टन सामग्री गिराई। श्रीलंका की वायु सीमा में बीस मिनट तक बहुत नीचे उड़ान भरते हुए हम कई फोटो खींचने की कोशिश करते हैं। जातीय दंगे और श्रीलंका सरकार के दमन के शिकार करीब छह लाख तमिल भाइयों के लिए भारत की यह सहायता मानव अधिकारों की रक्षा के लिए सारी दुनिया के नाम पैगाम भी है।

पांच बजकर दस मिनट पर सफाए विमान भारतीय वायु सीमा में वापस आ जाता है। राहत सामग्री पहुंचाने वाले विमानों की रक्षा के लिए भारतीय सीमा पर चक्कर लगा रहे चार लड़ाकू विमान-मिराज-२००० भी वापस लौटने लगते हैं। इतनी पक्की सुरक्षा व्यवस्था की मनाह लगने के कारण ही शायद आज श्रीलंका ने चूं नहीं की। अन्यथा कल रात जफना की समुद्री सीमा पर हमें श्रीलंका के लड़ाकू जहाज के कप्तान की चमकी के बाद राहत सामग्री वापस लाए जाने पर बहुत निराश और उत्तेजना हुई थी।

भारत सरकार द्वारा रेडक्रास की सहायता से २९ नौकाओं में राहत सामग्री पहुंचाने का पहला प्रयास मटालीव दंग से विफल हो गया था। दुनिया भर के समाचार माध्यमों के करीब नब्बे संवाददाताओं को रेडक्रास के सहायता दल के साथ जफना की समुद्री सीमा से लौटते समय लगा था कि भारत इतने छोटे से देश की मनमानी के सामने क्यों झुक गया और जब झुकना था तो सहायता का हल्ला हंगामा खड़ा करने की क्या आवश्यकता थी?

जफना की समुद्री सीमा से रात दो बजे हम पहले रामेश्वरम और सुबह मदुराई पहुंचे थे। आज दोपहर मदुराई से भिन्न मन:स्थिति में दिल्ली लौटते समय करीब सात दो घंटे विशेष विमान में विदेश मंत्रालय के निदेशक श्री मैत्रे ने सूचित किया कि एक विशेष संदेश मिलने के कारण अभी हम दिल्ली के बजाय पहले बंगलूर उतर रहे हैं। पौने तीन बजे बंगलूर में नहाकीय टंग से सूचित किया गया कि जफना के लिए राहत सामग्री लेकर वायु सेना के पांच विमान आ रहे हैं और हर विमान में सात-सात संवाददाता जा सकेंगे। गर्मजोशी और थोड़ासानी के बाद चुनिन्दा संवाददाताओं के नाम तय हो पाए और करीब पौने चार बजे हम जफना के लिए रवाना हो सके। तीन घंटे के इस गणनीय उड़ानपीय के बाद बंगलूर हवाई अड्डे पर उतरती संवाददाता इधर-उधर दौड़कर विमान-चालकों के अनुभव सुनने लगे। सी. उन विदेशी संवाददाताओं के चेहरे लटक गए, जो बात रात नौकाओं की यात्रा के बाद भारत की खिल्ली उड़ाने वाली रिपोर्ट भेज चुके थे।

यह मदुराई से दिल्ली रवाना होने समय भी जफना के तमिलों के संघर्ष को नैतिक समर्थन दे रहे तमिल संगठनों के नेताओं ने इस संवाददाताओं के साथ बातचीत में जाहिर व्यक्त की है कि भारत सरकार को जफना में मारे गए हजारों लोगों के परिवारों की सहायता के लिए खुलकर सामने आना पड़ेगा। केवल दो सहायता लिए किया यह समझ नहीं है।

भारत की कार्रवा

श्रीलंका का कड़ा

कोलंबो, ४ जून (भाषा, पार्ता)। श्रीलंका ने भारत द्वारा विमान से जाफना प्रायद्वीप में राहत सामग्री गिराए जाने पर कड़ा विरोध किया है।

श्रीलंका ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन के अनुसार सरकार ने कहा है कि इस तरह की कार्रवाई से जो गंभीर परिणाम होंगे उसके लिए भारत जिम्मेदार होगा।

रेडियो के अनुसार श्रीलंका ने भारत से कड़ा विरोध प्रकट किया है और कहा है कि यह उसकी संप्रभुता और अखंडता का खुला उल्लंघन है। रेडियो ने श्रीलंका के विदेश मंत्रालय के हवाले से कहा कि भारत की एकपक्षीय कार्रवाई को रोकने के लिए उसके पास सैन्य या अन्य कोई साधन नहीं है।

नई दिल्ली में श्रीलंका के उच्चायुक्त श्री बर्नार्ड तिलकरत्ने ने इस उड़ान का विरोध पर भारत सरकार को दिया।

श्रीलंका के [illegible] सुरक्षा मंत्री लक्ष्मण जयकोडी [illegible] है कि श्रीलंका छोटा देश है लेकिन [illegible] अपनी मामले में वह किसी भी देश [illegible] देने की अनुमति नहीं देगा।

श्रीलंका [illegible]

जफना के तमिलों के लिए चावल और दवाइयां गिराते हुए वायु सेना के जहाज।